बरसात के मौसम में पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन

डॉ. योगेंद्र सिंह जादौन एवं डॉ. अरविन्द कुमार ठाकुर

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-800014 (बिहार)

क्या करें ?

- बारिश के पहले पशुओं के पशुशाला की छत की मरम्मत कर दें जिससे बारिश का पानी ना टपके।
- पशुशाला की खिड़कियाँ खुली रखें तथा गर्मी एवं उमस से बचने के लिये पंखों का उपयोग करें।
- बारिश से पहले ही हमे ढेर सारा चारा इकट्ठा रखना चाहिए।
- उनकी दवाइयों कि भी उचित व्यवस्था रखनी चाहिए जिससे बारिश से यदि बीमार भी हो तो जल्दी से दवा दे सके।
- बारिश के मौसम में पशुशाला की साफ–सफाई का विशेष ख्याल रखें। उनके रहने के स्थान को साफ और सूखा रखना चाहिए।
- पशुशाला में पशु के मलमूत्र के निकासी का भी उचित प्रबंध हो। पशुशाला को दिन में एक बार फिनाइल के घोल से अवश्य साफ करें जिससे बीमारी फैलाने वाले बैक्टीरिया कम हो सकें।
- नियमित अंतराल पर कीटनाशक को भी छिड़कें।
- पशुओं को साफ एवं ताजा पानी पिलाएं।
- दाने का भंडारण नमी रहित जगह पर करें और ध्यान दें कि इस मौसम में दाने को 15 दिन से अधिक भंडार न करें।
- बारिश से पहले पशुओं में टीकाकरण अवश्य करवाएं। उचित टीकाकरण पशु चिकित्सक की सलाह पर शुरुआत में ही करें तथा प्रति वर्ष पुनः टीकाकरण दोहराएं। गाय एवं भैंसों में खुरपका मुँहपका, गलघोंटू, टंगिया रोग आदि का टीका बारिश से पहले लगाया जाता है। भेड़ और बकरियों में भी मानसून की शुरुआत में पीपीआर और गलघोंटू का टीका लगाया जाता है।

Scanned with ACE Scanner

Scanned with OKEN Scanner

- पशु चिकित्सक से समय.समय पर सलाह लेते रहें।
- खास बात ये है कि बारिश के मौसम में केवल उन्हें बरसाती चारा ही खिलाएं।

क्या न करें ?

- पानी को एक जगह पर एकत्रित नहीं होने दें जिससे मच्छर ना हों और परजीवी संक्रमण रोका जा सके।
- पशुघर में आवश्यकता से अधिक पशुओं को एकत्रित ना करें।
- जलाशय और चरागाह के रास्ते में पशुओं को ना दफनायें।
- पशुओं को बिजली के खम्बे से ना बांधें एवं बिजली के उपकरणों से दूर रखें।
- जानवरों को ज्यादा शारीरिक थकावट ना होने दें और बार.बार धूप में ना लाएं।
- पशु को खेतों के समीप गड्ढे या जोहड़ का पानी पिलाने से परहेज करें क्योंकि इस दौरान किसान खेतों में खरपतवार एवं कीटनाशक का इस्तमाल करते है। जो कि रिसकर इनमें आ जाता है।
- बाड़े में और उसके आसपास कचरा और गंदगी इक्कठा ना होने दें और उसके निकास की उचित व्यवस्था करें।
- बारिश के मौसम में पशुओं को बाहर चरने के लिए नहीं भेजें क्योंकि बारिश के मौसम में गीली घास पर कई तरह के कीड़े होते हैं जो पशुओं के पेट में चले जाते हैं और शरीर को नुकसान पहुँचाते हैं।

Scanned with ACE Scanner

Scanned with OKEN Scanner

जुलाई से सितम्बर माह में पशुओं की देखभाल कैसे करें ?

डॉ. योगेंद्र सिंह जादौन एवं डॉ. अरविन्द कुमार ठाकुर

प्रसार शिक्षा निदेशालय

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-800014 (बिहार)

जूलाई

- इस माह में वर्षा ऋतु आने की संभावना रहती है। अतः पशु परिसर को सूखा एवं साफ रखना चाहिए तथा गर्मी एवं नमी जनित रोगों से पशुओं को बचाना चाहिए।
- अंतः परजीवी एवं बाह्य परजीवी का प्रकोप इस माह में काफी होता है। अतः इनसे तथा इनसे संबंधित रोगों से बचाव अवश्य करें।
- खुरपका-मुँहपका (F.M.D), गल-घोंटू (H.S), लंगड़ा बुखार (B.Q), इन्टेरोटॉक्सिमिया रोग के टीके यदि नहीं लगाए गये हों, तो अब अवश्य लगवा दे।
- नजवात की सुरक्षा हेतु पशुपालकों को पूरी जानकारी होनी चाहिए। जैसे पैदा होने के साथ बच्चे के नाल को 1.3 से 2.0 इंच पर धागे से बांधकर एवं नये ब्लेड से काटकर टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- दुग्ध उत्पादन हेतु उचित मात्रा में खनिज-लवण की मात्रा पशु चिकित्सक की सलाह पर दिया जाना चाहिए अन्यथा खनिज-लवण की कमी से रोग हो सकते हैं।
- सिंचित हरे चारे के खेतों में जानवरों को नहीं जाने दें, क्योंकि लम्बी गर्मी के बाद अचानक वर्षों से जो हरे चारे की बढ़वार होती है उसमें साइनाइड जहर पैदा होने से चारा जहरीला हो जाता है। यह ज्वार के फसल में विशेष तौर पर होता है। ऐसी फसल को समय पूर्व कच्ची अवस्था में न काटें, न जानवरों को खिलायें।
- चारे के लिए मक्का की दूसरी फसल बोने का उचित समय है। बीज की मात्रा 25-30 किलोग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- बहुऋतुजीवी चारा घासों की रोपाई करें। संतुलित पशु आहार के लिए मक्का, बाजरा, लोबिया एवं ज्वार की एक साथ बोआई करें।
- पशुओं को शैड के अंदर रखें और दिन में तीन-चार बार पशुओं को नहलाएँ।
- पशुओं को पीने के लिए स्वच्छ और ताजा पानी दें। यदि पशु को गर्मी लग जाए तो पशु के शरीर के ऊपर ठंडा पानी डालें और चिकित्सक की सहायता से ग्लुकोज लगवाएं।
- यदि अधिक गर्मी में पशु के नाक से रक्त स्त्राव हो तो उसका सिर ऊपर उठाकर, सिर पर बर्फ वाला ठंडा पानी डालना चाहिए ।
- यदि पशुओं को गलघोंटू और ब्लैक क्वाटर के टीके न लगवाए गए हो तो ये बीमारियाँ बहुत अधिक नुकसान पहुंचा सकती हैं। ये टीके यदि पहले न लगवाए हो तो समय पर टीके लगवा लेने चाहिए और अभिलेख भी रखें।

Scanned with ACE Scanner

Scanned with OKEN Scanner

- इस महीने में मच्छर, मक्खियाँ और बाह्य परजीवियों की संख्या बढ़ जाती है जो पशुओं का रक्त चूसते हैं और बीमारी फैलाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार दवाई का उपयोग करें और शैड में छिड़काव करवाएँ। शैड के चारों तरफ आसपास की जगह में विशेष रूप से कोने और दरारों में छिड़काव करवाएँ। इस प्रक्रिया को 10-15 दिनों के बाद दोहराएँ। 6 महीने से छोटे बच्चे, चारा, आहार और पानी के ऊपर छिड़काव नहीं करना चाहिए। कंपनी द्वारा दी गई सलाह का पालन अवश्य करें।
- इस मौसम में पशु के घाव में कीड़े से बचाव के लिए उपाय करना चाहिए। मक्खियों से बचाव के लिए हाईमैक्स / चरमिल / लॉरेक्सेन / अक्टोसैप मलहम का उपयोग करना चाहिए।
- इस मौसम में सर्पदंश का खतरा बढ़ जाता है। यदि पशु अचानक गिर जाता है, गर्दन नीचा हो जाता है, थन में सूजन सांस लेने में कठिनाई, हृदय की धड़कन का बढ़ना, मुँह में झाग आना और शरीर का अकड़ना आदि लक्षण दर्शाये तो पशु को ध्यानपूर्वक सर्पदंश के निशान के लिए देखें औ जल्दी से जल्दी पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- पशु को काला या फफूंद लगा हुआ दाना कभी भी नहीं खिलाना चाहिए।

अगस्त

- पशुओं को अत्यधिक तापमान एवं तेज धूप से बचाने के उपाय करें।
- खुरपका-मुँहपका (F.M.D) रोग, गल-घोंटू (H.S.), लंगड़ी बुखार (B.Q), इन्टेराटौक्सिमिया रोग के टीके यदि नहीं लगाए गये हों तो अवश्य लगवा दें।
- पशुओं के खुरपका-मुँहपका रोग से ग्रसित होने पर रोगग्रस्त पशुओं को अलग रखें एवं ग्रसित पशुओं की खान-पान की व्यवस्था भी अलग से करें।
- खुरपका-मुँहपका रोग से ग्रस्त पशुओं के दूध को उसके बछड़ों को न पीने दें। ऐसा करने से बछड़े संक्रमित होने से बचेंगे एवं स्वस्थ रहेंगे।
- रोगग्रस्त पशुओं के मुँह, खुर व थनों के छालों को लाल दवा (पोटेशियम परमैगनेट) का 1 प्रतिशत घोल बनाकर धोयें।
- इस माह में पशुओं में गल-घोंटू एवं लंगड़ी ज्वर रोग की संभावना बनी रहती है। अतः रोग के लक्षण दिखते ही पशुचिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।
- भेड, बकरियों में पी.पी.आर., चेचक रोग होने की संभावना रहती है। अतः बचाव के लिए टीके निश्चित रूप से लगवा लें।
- पशुओं को कृमिनाशक की दवा पशु चिकित्सक से परामर्श के बाद निश्चित रूप से दें।
- पशुओं को बाह्य परजीवी हो जाने पर पशु चिकित्सक की सलाह लेकर बाह्य परजीवी की दवा का उपयोग करें।
- बरसात के मौसम में पशु घरों को साफ-सुथरा एवं सूखा रखें।

Scanned with ACE Scanner

Scanned with OKEN Scanner

- यदि आपके पशुओं में खुरपका-मुँहपका रोग का प्रकोप है, तो इसे स्वस्थ पशुओं से अलग रखें। यदि आस-पास के पशुओं से यह रोग फैल रहा है तो अपने पशुओं का सीधा संपर्क रोगी पशुओं से नहीं होने दें।
- पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए खनिज मिश्रण 30-50 ग्राम प्रतिदिन दें, जिससे पशुओं में दूध उत्पादन के साथ ही शारीरिक तन्दुरूस्ती बनी रहे।
- गाभिन पशुओं को प्रसव से दो हफ्ते पहले अलग रखना चाहिए ताकि उनकी उचित देखभाल की जा सके।
- जो पशु में प्रसव के लक्षण दिखे परन्तु कठिनाई आ रही हो तो जल्द से जल्द पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- यदि जेर 8-12 घंटे में न गिरे तो डॉक्टर से परामश लें।
- दुग्ध बुखार को रोकने के लिए अधिक दूध देने वाले पशुओं का दूध पूर्णरूप से नहीं निकालना चाहिए।
- जन्मोपरांत जल्दी से जल्दी बछड़ों / पंडवों को साफ करके सूखा करें और दो घंटे के अंदर पहिला दूध अवश्य पिलाएँ।
- नवजात पशु के नाभि में टिंचर आयोडीन लगाकर कीटाणुरहित करें ।
- पशुओं के घाव में मलहम लगाकर कीटाणुरहित मक्खियों से बचाव करते रहें ।
- पशुओं में वातावरणीय तनाव को कम करने के लिए आवास हवादार और आरामदेह रखने चाहिए। दाने में भी बदलाव करते रहना चाहिए।
- गल-घोंटू बीमारी के टीके न लगे हो तो अवश्य लगवा लें।
- बाह्य परजीवियों से बचाव के लिए पशुघर के अंदर और पशु के ऊपर पशुचिकित्सक की सलाह अनुसार स्प्रे करें और 10 दिनों के बाद इस प्रक्रिया को दोहराएँ।

सितम्बर

- सितम्बर माह में वातावरण के तापमान में उतार-चढ़ाव के दुष्प्रभावों से पशुओं को बचाने के उपायों पर ध्यान दें। ऐसे समय में पशुओं को दिन के समय धूप से बचाने तथा पीने के पानी की समुचित व्यवस्था करें और रात के समय ठंड से बचाने के लिए छप्पर इत्यादि के नीचे पशुओं को बांध कर रखें।
- अधिक वर्षा होने पर पशुशाला में जल भराव समस्या व आद्रता जनित रोगों के संक्रमण की प्रबल सम्भावना बनी रहती है। अतः वर्षा जल निकासी का समुचित प्रबंध करें।
- पशुओं को यथासंभव सूखे व ऊँचे स्थान पर रखें।
- चारागाह/बाड़े की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। समय-समय पर फर्श व दीवारों पर चूने के घोल का छिड़काव करें।
- रक्त परजीवी जैसे-थाइलेरिया, ट्रिपैनोसोमा, बबेसिया इत्यादि वर्षा काल में जन्म लेते हैं तथा मच्छर, कीट व चीचड़ इत्यादि के द्वारा फैलते हैं। अतः बाड़े के आस-पास गंदा पानी एवं गंदगी एकत्रित न होने दें।
- परजीवीनाशक दवा घोल अवश्य पिलायें। परजीवीनाशक दवा को हर बार बदल-बदल कर उपयोग में लायें अथवा नजदीकी पशु चिकित्सालय में जाकर गोबर जाँच अवश्य करवायें। विशेष रूप से मेमनों को इन्टेरोटॉक्सिमीया रोग का टीका लगवाएँ।

Scanned with ACE Scanner

Scanned with OKEN Scanner

- गर्मी व नमी जनित रोगों में मुख्य रूप से, कोलीबेसिलोसिस, साल्मोनेलोसिसि, कवक (फफूदी) जनित रोग है। इसके अतिरिक्त गल-घोंटू (H.S.) और लंगड़ी बुखार (B.Q) के फैलने की संभावना भी अत्यधिक रहती है। अतः समय रहते इनके टीके पशुओं में अवश्य लगवा लें अथवा रोग होने पर पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।
- हरे चारे की अधिक उपलब्धता के कारण पशुओं में हरे चारे के अधिक सेवन से संबंधित समस्याओं से बचने के लिए पशुओं को बार-बार खुले में चरने के लिए नहीं भेजें। इससे संक्रमण होने की संभावना बढती है। इसलिए हरे चारे / दाने के साथ लवण-मिश्रण अवश्य दें।
- चारे के संग्रहण पर विशेष ध्यान दें। नमी के कारण कई फंफूद जनित रोगों के संक्रमण का खतरा रहता है।
- हरे चारे से साईलेज बनाएँ अथवा हरे चारे के साथ सूखे चारे को मिलाकर खिलाएँ क्योंकि हरे चारे के अधिक सेवन से पशुओं में दस्त की समस्या हो सकती है।
- सितम्बर माह में बरसीम, लूसर्न की बुआई कर सकते हैं।
- मक्का, नेपियर, गिनी घास, ज्वार, सूडान आदि इस माह में ज्यादा मिलते हैं। इनका उपयोग भी हरे चारे के रूप में कर सकते हैं।
- स्वस्थ पशु बच्चा देने के उपरांत 50-60 दिनों में गर्मी में आ जाता है। ऐसे पशुओं को गर्मी के लक्षण के लिए ध्यानपूर्वक देखें और कृत्रिम गर्भाधान करवाएँ जिससे कि दो ब्यांतों का अंतराल कम किया जा सके ।
- प्रसव के बाद पशु का भार में कमी होती है अतः गर्मी में देरी से आते हैं। इसलिए पशुपालकों को संतुलित आहार और उचित देखभाल की ओर ध्यान देना चाहिए।
- बछड़ों / पंडवों के बैठने की जगह को नमीरहित और कृमिरहित रखें। उचित समय पर टीकाकरण और सींग रहित करवाएँ।
- बाह्य परजीवियों से बचाव के लिए ब्यूटॉक्स 0.2 प्रतिशत (2) मिलीलिटर / लिटर पानी) पशुओं पर और शैड में स्प्रे करें। छह महीने से छोटे बछड़े / पंडवे के ऊपर स्प्रे न करें। छिडकाव के दौरान कंपनी के द्वारा दी गई सलाह को अवश्य पढ़ें और पालन करें। मक्खियों से बचाव के लिए शैड और आसपास को स्वच्छ रखें।
- सर्रा रोग से बचाव के लिए जल्द से जल्द डॉक्टर से संपर्क करें क्योंकि इस बीमारी को कारण एक विशेष प्रकार की मक्खियाँ होती हैं। जिसके बचाव के लिए दवाई का छिड़काव करें।
- कृमि से बचाव के लिए समय-समय पर पशुओं को कृमिरहित करने के उपाय करते रहना चाहिए।
- थन की बीमारी से बचाव के लिए टीट डिप का इस्तेमाल अवश्य करते रहना चाहिए।

Scanned with ACE Scanner

Scanned with OKEN Scanner